काल कोठरी में राजनीति

भ्रष्टाचार

प्रमोद जोशी

राजनीति काली कमाई का एक प्रमुख जरिया बनती जा रही है। राजनीति ऐसा कारोबार बन गई है, जिसमें बिना पैसा लगाए और बिना किसी जोखिम के वारे-न्यारे होने में देर नहीं लगती। यह कहानी केवल लालू प्रसाद यादव की ही नहीं है। भ्रष्टाचार का यह कीड़ा समूची राजनीति में लगा है। सवाल यह है कि राजनीति जनसेवा से धंधा क्यों बन गई?

एक सामान्य कारोबारी को लखपति से करोड़पति बनने में दस साल लगते हैं, पर आप राजनीति में हों तो यह चमत्कार इससे भी कम समय में संभव है। वह भी बगैर किसी कारोबार में हाथ लगाए। भाजपा नेता सुशील कुमार मोदी का दावा है कि लालू प्रसाद का परिवार 2000 करोड़ रुपये की संपत्ति का मालिक है। इस दावे को अतिरंजित मान लें, पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि उनकी मिल्कियत करोड़ों में है। कई शहरों में उनके परिवार के नाम लिखी अचल संपत्ति के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है।

यह कहानी केवल लालू यादव की नहीं, समूची राजनीति की है। पश्चिम बंगाल में करोड़ों का शारदा चिटफंड घोटाला एक और उदाहरण है। इस मामले में दो सांसद, एक मंत्री और पुलिस के एक डीजी को जेल की हवा खानी पड़ी। अभी इसके तार पूरी तरह खुले नहीं हैं। राजनीति ऐसा कारोबार बन गई है, जिसमें बिना पैसा लगाए और बिना किसी जोखिम के वारे-न्यारे होने में देर नहीं लगती। साल 1962 में संथानम कमेटी ने इस बात की ओर इशारा किया था कि देश में भ्रष्टाचार का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत राजनीति है। तबसे अब तक यह धंधा दिन दूना, रात चौगुना बढ़ा है। राजनेताओं पर आरोप लगते रहे हैं, पर उनका बाल बांका नहीं होता। पिछले एक दशक से इस कहानी में मोड़ आया है। राजनीति ने सामाजिक-सांस्कृतिक पहचानों के सहारे अपनी जड़ें जमाई हैं। जैसे ही उस पर कार्रवाई होती है, वह उसे बदले की कार्रवाई साबित करने लगती है। भ्रष्टाचार का यह कीड़ा समूची राजनीति में लगा है, पर क्षेत्रीय दलों में उसका असर बहुत ज्यादा है। मुफलिसों और दबे-कुचले लोगों के सपनों को पूरा करने का दावा करने वाली यह राजनीति उस सामंती व्यवस्था को और ताकतवर बना रही है, जिसके विरोध में उसका जन्म हुआ है। लालू यादव मुफलिसी से जूझते हुए राजनीति की अगली कतार में आए हैं। उनके पीछे जनता की ताकत ने

पश्चिम बंगाल में करोड़ों का शारदा चिटफंड घोटाले में दो सांसद, एक मंत्री और पुलिस के एक डीजी को जेल की हवा खानी पड़ी। 1962 में संथानम कमेटी ने इस बात की ओर इशारा किया था कि देश में भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा स्रोत राजनीति है।

उन्हें सत्ता के शिखर पर बैठाया। विडंबना है कि सत्ता ने उन्हें सुख-सुविधाओं से परिचित कराया। जरूरतें बढ़ती गईं और रास्ते बनते गए। उनके परिवार की संपत्ति को लेकर जो मामले सामने आए हैं, वे आरोप के स्तर पर हैं। लालू प्रसाद के परिवार के पास इन आरोपों को अदालत में गलत साबित करने का मौका है। वक्त बताएगा कि उन पर लगाए जा रहे आरोप सही हैं या नहीं, पर कुछ बातें साफ और साबित हैं। वे व्यक्तिगत रूप से एक मामले में सजायाफ्ता हैं। इसके कारण वे सक्रिय राजनीति में भाग नहीं ले सकते। पहली बार जब वे जेल गए थे, तब उन्होंने अपनी पत्नी को बिहार की मुख्यमंत्री बनाया था। अब जब वे सक्रिय राजनीति में भाग लेने से वंचित हैं, तब उन्होंने अपने बेटे को उप-मुख्यमंत्री बनाया है। उनकी यह राजनीति बिहार के महागठबंधन में दरारें पैदा कर रही है। लालू यादव की राजनीति के नैतिक पक्ष का फैसला उनके वोटर और समर्थक करेंगे, पर कानूनी फैसला अदालत में ही होगा। सीबीआई, प्रवर्तन निदेशालय और आयकर विभाग के छापों को उन्होंने बदले की कार्रवाई बताया है। यह एक राजनीतिक वक्तव्य है। उन्हें लगता है कि उनके साथ अन्याय हो रहा है, तो उन्हें अदालत में जाना चाहिए। लालू प्रकरण के मार्फत भारतीय राजनीति का जो रूप सामने आ रहा है वह निराशाजनक है। यह राजनीतिक विद्रूप केवल इसी परिवार तक सीमित नहीं है, पर यह एक उदाहरण जरूर है।

हाल के वर्षों में हमारे सामने मधु कोड़ा, ओम प्रकाश चौटाला और तमिलनाडु के शशिकला प्रकरण का उदाहरण है। जयललिता अब हमारे बीच नहीं हैं, पर शशिकला को जयललिता के कारण जेल में जाना पड़ा। हाल के वर्षों में कई क्षेत्रीय क्षत्रप भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे हैं। यह सब तब संभव हो पाया जब पिछले कुछ वर्षों में मनी लांड्रिंग, काले धन और बेनामी संपत्ति से जुड़े कानूनों में बदलाव किया गया है। कानूनी सुधार की जिम्मेदारी इसी राजनीतिक वर्ग की है। हमारा वोटर संकीर्ण भावनाओं में बहकर फैसले करता है, जिससे राजनीतिक रोटियां सेंकी जाती हैं। नब्बे के दशक में जब लालू यादव पहली बार मुख्यमंत्री बने थे तब उन्होंने कहा, 'नून भात खाना है, बिहार को बनाना है।' उनका उत्साह इतना ज्यादा था कि वे मुख्यमंत्री के विशिष्ट आवास में रहने को तैयार नहीं हुए। काफी अनुरोध के बाद वे वहां रहने को राजी हुए। उनकी बातों को जनता का समर्थन मिला। लोगों को लगा कि हमारे बीच का कोई आदमी मुख्यमंत्री बना है। अब सब बदल जाएगा, पर लगता है कि कुछ समय बाद ही लालू प्रसाद को सत्ता की राजनीति का असली मतलब समझ में आ गया। राजनीति का मतलब उनके लिए चुनाव जीतने के अलावा कुछ नहीं रहा। इस सफलता के लिए उन्होंने सामाजिक समीकरण भी गढ़े, जो उन्हें शिखर पर बनाए रखने में मददगार बने। नब्बे के दशक में उनके खिलाफ चारा घोटाले का आरोप लगा। निचली अदालत से सजा होने के बाद वे जेल में रहे। अब सुप्रीम कोर्ट में केस है। जल्द उसका फैसला भी आएगा। ऐसा नहीं कि देश में केवल चारा घोटाला ही अकेला घोटाला था, पर यह ऐसा मामला था जो अपनी तार्किक परिणति तक पहुंचा। इसमें किसी की साजिश नहीं थी। अब जो मामले सामने आ रहे हैं वे बेनामी संपत्ति के हैं। उन पर आरोप है कि रेलवे का होटल लीज पर देकर बदले में उन्होंने पटना में ऐसी जमीन परिवार के नाम ली, जिसकी कीमत अब सैकड़ों करोड़ है।

लालू पहली बार मनी लांड्रिंग रोकथाम कानून का सामना कर रहे हैं। चारा घोटाले की जांच के समय मनी लांड्रिंग का कानून था ही नहीं। उस समय सीबीआई ने उनके खिलाफ सिर्फ भ्रष्टाचार निरोधक कानून के तहत जांच की थी। इसके साथ ही आयकर विभाग उनकी बेटी मीसा भारती और उनके पति शैलेश कुमार, राबड़ी देवी और उनके बेटे तेजस्वी प्रसाद को संपत्ति जब्त करने का नोटिस भी भेज चुका है। दिल्ली और पटना की अचल संपत्तियों को लेकर कार्रवाई की जा रही है। उनके कई रिश्तेदार भी संदेह के घेरे में हैं। लालू के खिलाफ छापेमारी के राजनीतिक निहितार्थ भी हैं। कांग्रेस का कहना है कि सीबीआई के छापे सिलेक्टिव हैं, पर भ्रष्टाचार के आरोप हवाई नहीं हैं। यह समूची राजनीति का सवाल है। सवाल यह है कि राजनीति जनसेवा से धंधा क्यों बन गई?

विश्वास का सूर्योदय

भारत

प्रो. पीके आर्य

दुनिया के लिए भारत सदा आकर्षण का केंद्र रहा है। वैश्विक सभ्यता जब अपनी आंखें खोल रही थी, तब भारत संस्कृति और मानवीय मूल्यों के लिए सभी की अंगुली पकड़कर आगे आगे चल रहा था। फिर मनुष्य की आकांक्षाओं ने उड़ान भरी और शक्ति बल और छल की बिसात पर देशों के भूगोल बदले तब भारत

वर्तमान में भारत फिर से दुनिया के आकर्षण का केंद्र बन रहा है। अनेक देशों के राजनेता भारत की राजनीति से प्रभावित हो रहे हैं। मोदी युग में भारतीय राजनीति के क्षितिज पर नई संभावनाओं का सूर्योदय हुआ है।दुनिया के अन्य अनेक देश आज भारत को एक नए चश्मे से देखने को विवश हुए हैं। ये सब अर्जित किया गया है।

सभी के लिए सोने की एक ऐसी चिड़िया के रूप में था , जिसका शिकार हर कोई करना चाहता था। फिर एक युग ऐसा भी आया जब यहां के ज्ञान के प्रभाव में दुनियाभर के विचारक इधर खिंचे चले आने लगे। वर्तमान में भारत फिर से दुनिया के आकर्षण का केंद्र बन रहा है। अनेक देशों के राजनेता भारत की राजनीति से प्रभावित हो रहे हैं। अनेक देशों में भारत के उन्नयन की चर्चाएं हैं, कल तक सांपों, सपेरों और फ़क़ीरों का देश बताकर हमारी कतिपय खिल्ली उड़ाने वाले देश अपने उपग्रह उड़वाने के लिए लाइन में खड़े हैं। मोदी युग में भारतीय राजनीति के क्षितिज पर नई संभावनाओं का सूर्योदय हुआ है।दुनिया के अन्य अनेक देश आज भारत को एक नए चश्मे से देखने को विवश हुए हैं। ये सब अर्जित किया गया है। फोर्ब्स पत्रिका में छपे एक सर्वे आलेख के अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली मोदी सरकार दुनिया की सभी सरकारों में सबसे ज्यादा भरोसेमंद सरकार है। ऑर्गनाइज़ेशन फ़ॉर इकोनॉमिक को-ऑपरेशन एंड डेवलपमेंट (ओइसीडी) की रिपोर्ट के अनुसार भारत के 73 फीसदी नागरिक मौजूदा सरकार के प्रति गहरे आश्वस्त हैं। किसी भी निर्वाचित सरकार के तीन साल बीत जाने के बाद भी नागरिकों की यह धारणा उसके लिए एक वरदान से कम नहीं है। इस क्रम में 62 फीसदी नागरिकों के समर्थन से कनाडा की दूसरे और 58 फीसदी के क्रम में तुर्की की सरकार तीसरे पायदान पर हैं। नरेंद्र मोदी बेहद ही सूझ बूझ और सधे हुए अंदाज़ में अग्रसर हैं।

प्रधानमंत्री बनते ही अपनी पहली भूटान यात्रा से मोदी के गहरे निहितार्थ जुड़े हैं। दरअसल हमें अब वास्तविक खतरा यदि किसी से है तो वह है चीन। पाकिस्तान तो सिर्फ हव्वा है। तिब्बत, नेपाल, भूटान और बांग्लादेश की यात्राएं गहरी कूटनीति का हिस्सा हैं। यहां तक कि चीन के साथ किए जाने वाले वार्ता व्यवहार भी किस परिप्रेक्ष्य में थे,यह भविष्य बताएगा। मोदी के एक व्यक्ति के रूप में अपने संकल्पों के साथ दृढ़ता उन्हें औरों से पृथक करती है। यही वह गुण है जो उनके व्यक्तित्त्व और कृतित्व में एक स्पार्क पैदा कर रहा है। भारत के भोले लोग भले ही न समझे लेकिन दुनियावी राजनीति में सक्रिय पुरोधा मोदी की शक्ति, संकल्प और रणनीति को खूब अच्छे से भांप रहे हैं। उन्हें यह भी समझ आ चुका है कि राहुल, नीतीश, मुलायम, माया,और ममता आदि मोदी के सामने कहीं भी नहीं ठहरते! अमेरिका, जापान, लंदन, साउथ अफ्रीका, ब्राजील, मॉरीशस, कनाडा और हाल ही की इजराइल यात्राओं ने मोदी के लिए विश्व भर में एक अलग और नितांत उनकी अपनी स्थिति निर्मित की है। जीएसटी और नोटबनंदी के निर्णय ने मोदी को दुनिया के कद्दावर नेताओं की सूची में सिरमौर बना दिया है। विदेशों में सक्रिय अन्य देशों के राजनयिक विशेषज्ञ मानते हैं कि मोदी अगले दो कार्यकालों तक प्रभावमान रहेंगे। भारत बदल रहा है, यह बदलाव भारत के लिए अच्छा है। आने वाले समय मे विश्व शक्ति का रूपांतरण होगा और स्थानांतरण भी। भारत उसमें सक्रिय दखल रखेगा और अपनी प्रभावी स्थिति भी।

भारत-चीन तनाव का निदान जरूरी

पड़ोस

प्रभात कुमार रॉय

भारत भूटान और चीन को जोड़ने वाली सरहद पर भूटान के डोकलाम विवाद के कारण भारत और चीन के मध्य जबरदस्त सैन्य तनाव की स्थिति बरकरार है। भूटान की सार्वभौमिक सत्ता और क्षेत्र की हिफाजत करने की जिम्मेदारी भारत सरकार की है और भारत इससे कदापि मुंह नहीं मोड़ सकता है। चीन सरकार का मीडिया चीख रहा है कि जब तक डोकलाम से भारत की फौज पीछे हट नहीं जाती, तब तक भारत और चीन के मध्य कोई कूटनीतिक बातचीत मुमकिन नहीं है। शासकीय सूत्र इंगित कर रहे हैं कि अतिशीघ्र भारत सरकार के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल चीन के कूटनीतिक दौरे पर रवाना हो जाएंगे। भारतीय हुकूमत यकीनन पाकिस्तान सरहद के साथ ही चीनी सरहद पर एक और फौजी मोर्चा कदापि खोलना नहीं चाहेगी। पाकिस्तान द्वारा संचालित प्रॉक्सी वार साथ ही भारतीय फौज कश्मीर घाटी में और भारत-पाक सरहद पर जूझ रही है। चीन की विस्तारवादी फितरत के साथ तो भारत को केवल अपने कूटनीतिक कौशल के साथ ही निपटना होगा। दुनिया के विहंगम पटल पर भारत ने ऐतिहासिक तौर पर सदैव संतुलित कूटनीति का मार्ग अपनाया है। महाशक्तियों के सैन्य गुटों से बहुत दूर रहकर सदैव गुटनिरपेक्ष नीति का अनुसरण किया। वर्ष 1991 में साम्यवादी सोवियत संघ के पराभव के बाद जब शीतयुद्ध का समापन हो गया तो ऐसा प्रतीत हुआ कि भविष्य में तीसरे विश्वयुद्ध का खतरा दुनिया के सिर पर नहीं मंडराएगा। दुनिया फिर से एक बार दो सैन्य गुटों में विभाजित हो चुकी है। एक तरफ अमेरिका के नेतृत्व में नॉटो राष्ट्रों का गुट है दूसरी तरफ चीन और रूस के नेतृत्व में सीरिया और ईरान आदि राष्ट्र एकजुट हो रहे हैं। भारत का कूटनीतिक झुकाव क्योंकि अमेरिकन गुट की तरफ बढ़ा है, अतः दूसरे सैन्य गुट के चौधरी चीन ने भारत के विरुद्ध शत्रुता का शंख बजा दिया है।

वर्ष 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौर में तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने युद्ध की अत्यंत जटिल परिस्थिति में कूटनीतिक कौशल का परिचय देते हुए पूर्व सोवियत संघ द्वारा चीनी हुकूमत पर दबाव कायम कराने के लिए कूटनीतिक अस्त्र का कामयाब प्रयोग किया गया था। सोवियत संघ के कूटनतिक और सैन्य दबाव के कारण चीनी लाल फौज साल 1965 में भारत-पाक युद्ध में दखलंदाजी नहीं कर सकी। तभी तो लालबहादुर शास्त्री को सोवियत संघ के दबाव में पाक के साथ विवश होकर ताशकंद समझौता अंजाम देना पड़ा और विजित क्षेत्र पाकिस्तान को लौटाना पड़ा। वर्ष 1971 के बांग्लादेश युद्ध के दौर में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी ऐसे ही कूटनीतिक कौशल का शानदार परिचय देते हुए सोवियत संघ से रातों-रात 20 वर्षीय फौजी संधि अंजाम दी और सोवियत सैन्य शक्ति द्वारा अमेरिका और चीन दोनों को ही बांग्लादेश युद्ध में दखलदाजी करने से रोक दिया गया। सैन्य इतिहास निरुपित करता है कि दो

जब कभी सैन्य युद्धों को भारत पर जबरन थोपा गया, तभी भारत की फौज बैरकों से बाहर आई। चीन की फितरत विस्तारवादी है और भारत का चरित्र रक्षात्मक है। भारत युद्ध से भयभीत नहीं होता, किंतु शांतिपूर्ण निदान के समस्त मार्ग अवरुद्ध हो जाने पर ही युद्ध में उतरता है।

फौजी मोर्चों पर एकसाथ युद्धरत सेना की प्रायः करारी पराजय होती है। हिटलर की जर्मन फौज की यही दास्तान है। हिटलर ने हठवश अपने फौजी जनरलों की सलाह को स्वीकार नहीं किया और अपनी सैन्य सनक में सोवियत संघ पर आक्रमण करके एक साथ युद्ध के दो मोर्चे खोल दिए।

यदि हिटलर ने ऐसी गंभीर सैन्य गलती अंजाम नहीं दी होती तो द्वितीय विश्वयुद्ध का संभवतया कुछ और ही परिणाम हुआ होता। भारत निश्चित तौर से चीन के साथ युद्ध नहीं चाहता और विश्व की आर्थिक महाशक्ति बन जाने के लिए लालायित चीन भी भारत विनाशकारी युद्ध में कदापि उलझना नहीं चाहेगा। सर्वविदित है कि साल 1987 में भारतीय सेना ने चीन की लाल फौज को सरहद पर एक सैन्य झड़प में गंभीर सबक सिखाया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा चीन के साथ तनावपूर्ण रिश्तों को सौहार्दपूर्ण बनाने का आग़ाज किया। अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन के साथ कूटनीतिक संबंधों को नए शिखर तक पंहुचाया। वर्ष 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री वाजपेयी हुकूमत द्वारा चीनी हुकूमत के साथ अंजाम दी गई कूटनीतिक वार्ताओं में ऑक्साईचीन और अरुणाचलम विवाद को निपटा लेने के लिए सहमति प्रायः निर्मित हो गई थी।

संक्षेप में कहें तो भारत द्वारा ऑक्साचीन के अठतीस हजार स्कवॉयर किलोमीटर और चीन द्वारा नब्बे हजार स्कवॉयर किलोमीटर अरुणाचलम क्षेत्र पर अपने अपने दावे का परित्याग करने की कूटनीतिक सहमति हो गई थी। दुर्भाग्यवश साल 2004 के लोकसभा चुनाव में वाजपेयी की पार्टी भाजपा परास्त हो गई और चीन के साथ सीमा विवाद पर भारत किसी निर्णायक समझौते पर पंहुच नहीं सका। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह हुकूमत द्वारा संपूर्ण सदाश्यता के साथ वाजपेयी हुकूमत द्वारा प्रारंभ की गई भारत-चीन कूटनीतिक वार्ताओं का सिलसिला बाकायदा जारी रखा गया, क्योंकि मनमोहन सिंह में अटल बिहारी वाजपेयी सरीखे कूटनीतिक कौशल का भाव था। अतः कोई भी ठोस परिणाम भारत-चीन के मध्य आयोजित कूटनीतिक वार्ताओं का सामने नहीं आ पाया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2014 में सत्तासीन होते ही पड़ोसी राष्ट्रों से संबंध सुधारने की जोरदार पहल को अंजाम दिया। संपूर्ण प्रयास के बावजूद प्रॉक्सीवार जारी रहते दुर्भाग्यवश पाकिस्तान के साथ संबंध बहुत अधिक बिगड़ गए और चीन के साथ भी आजकल सरहद पर जबरदस्त सैन्य तनाव विद्यमान है। भारत और चीन के मध्य सरहद पर जारी तनाव का निपटारा तो केवल कूटनीतिक वार्ताओं के माध्यम से ही किया जा सकता है। भारत ने तो परस्पर विवादों का निदान सदैव ही शांतिपूर्ण वार्ता के माध्यम से निकालने को प्राथमिकता प्रदान की है। इतिहास गवाह भारत कभी भी आक्रमणकारी राष्ट्र नहीं रहा। जब कभी सैन्य युद्धों को भारत पर जबरन थोपा गया, तभी विवश होकर भारत की फौज अपनी बैरकों से बाहर आई। चीन की फितरत विस्तारवादी है और भारत का चरित्र रक्षात्मक है। रक्षात्मक फितरत वाला भारत युद्ध से भयभीत नहीं होता, किंतु शांतिपूर्ण निदान के समस्त मार्ग अवरुद्ध हो जाने पर ही युद्ध में उतरता है।

सवालों में कश्मीरियत

संदर्भ

डॉ चंद्र त्रिखा

बात सिर्फ कश्मीरियत की होती है, मगर कश्मीर में डोगरीयत भी है और लद्दाखीयत भी। जब भी कश्मीरियत की बात होती है, तब यह भुला दिया जाता है कि कश्मीर, सिर्फ कश्मीर घाटी तक सीमित नहीं है। उसमें जम्मू डिविजन भी हैं, लद्दाख डिविजन भी, पाक अधिकृत कश्मीर भी, गिलगित-बाल्टिस्तान भी और चीन-प्रशासित ऑक्साईचिन और कर्णकोरम दर्रा भी है। इन सबको मिलाकर कश्मीर-कश्मीरियत का ढांचा पूरा होता है। पहली ईस्वी शताब्दी के मध्य कश्मीर हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। बाद में बुद्ध धर्म का प्रसार यहां खूब हुआ। इसके बाद नौवीं शताब्दी में कश्मीर शैव-धर्म का एक प्रमुख केंद्र बन गया।

वर्ष 1339 में पहली बार शाह मीर यहां का पहला मुस्लिम शासक बना। उसका वंश 1585 तक चला। उसी वर्ष यह मुगलों के कब्जे में आ गया और वर्ष 1751 तक यहां मुगलों का शासन चला। उस वर्ष यानी 1751 से 1820 तक अफ़गान-दुर्रानी साम्राज्य ने यहां की सत्ता हथियाए रखी। उसी वर्ष यहां सिख महाराजा रणजीत सिंह ने सत्ता के सूत्र संभाल लिए। वर्ष 1846 से यहां डोगरा-वंश का शासन स्थापित हुआ मगर ब्रिटेन का दखल बना रहा। आतंकवादी वारदातों के बावजूद एक ग़जब का क्षेत्र है कश्मीर। अब वहां सिर्फ विसंगतियों का बोलबाला है, लेकिन अमरनाथ-यात्रियों पर हुए आतंकी हमले के बावजूद यह तथ्य अपनी जगह कायम है कि सदियों तक इस अंचल में हिंदू-मुस्लिम सौहार्द चरम पर रहा है। कश्मीर एकमात्र ऐसा क्षेत्र है कि जहां अनेक मुस्लिम अपने नाम के साथ 'पंडित' या 'भट्ट' शब्द का प्रयोग करते हैं। अनेक हिंदू रोजे रखते हैं । यहां मुस्लिम सूफियों को ऋषि कहा जाता है। सर्वाधिक चर्चित सूफ़ी संत शेख नूरुद्दीन को सम्मान व श्रद्धा के रूप में मुस्लिम व हिन्दू 'नंद-ऋषि' के नाम से पुकारते हैं। इस नंद ऋषि के बारे में भी अनेक किस्से कहानियां प्रचलित हैं। प्रचलित मान्यता यह है कि नंद ऋषि के पिता सालार सांज भी एक नेकनीयत खुदा-बन्द इंसान थे और उन्हीं के अच्छे संस्कारों ने नंद ऋषि अर्थात शेख नूरुद्दीन को नेक रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी। इस नंद ऋषि का जन्म वर्ष 1377 को यहां के एक गांव कैमुख में हुआ था। एक मान्यता यह भी है कि प्रमुख महिला सूफ़ी संत लालदे ने बचपन में नंद ऋषि की देखभाल की थी। कहा यही जाता है कि 12 बरस तक एक गुफ़ा में तपस्या के बाद नंद ऋषि ने अपने

कश्मीर में डोगरीयत भी है और लद्दाखीयत भी। जब भी कश्मीरियत की बात होती है, तब यह भुला दिया जाता है कि कश्मीर, सिर्फ कश्मीर घाटी तक सीमित नहीं है। उसमें जम्मू डिविजन भी हैं, लद्दाख भी, पीओके भी। इन सबको मिलाकर ही कश्मीर-कश्मीरियत का ढांचा पूरा होता है।

विचारों को लोगों में फैलाया। हजारों की संख्या में हिंदू व मुस्लिम उनके शिष्य बन गए। उनके प्रचार-केंद्र 'जियारत' के नाम से जाने गए। अब भी ऐशमुकाम और अनंतनाग में सूफ़ी-केंद्रों पर आतंकी माहौल के बावजूद खूब भीड़ जुटती है। ऐशमुकाम की दरगाह के साथ एक अन्य सूफ़ी संत जनक ऋषि का नाम जुड़ा हुआ है। इस घाटी में सूफ़ीवाद का प्रवेश 1324 से माना जाता है। सूफ़ी हारत सैयद शरीफुद्दीन रहमान उर्फ बुलबुल शाह की मार व दरगाह श्रीनगर में आज भी मौजूद है। प्रो. हरबंस सिंह ने सूफियों पर एक शोध किया है। उन्होंने नूरुद्दीन उर्फ नंद ऋषि और लल्लेश्वरी के बारे में कई तथ्य पेश किए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि शेख नूरुद्दीन अपने समय के महान कश्मीरी संत रहे हैं। जब उनकी मृत्यु 26 मार्च, 1439 में हुई तो उन्हें शाही सम्मान के साथ चरार-ए-शरीफ़ में दफ़नाया गया। कश्मीर की ऐसी पहचान उसकी वर्तमान हिंसक पहचान से कहां मेल खाती है?

सांसद और राष्ट्रपति

सांसद सांसद मुख्यमंत्री अब राष्टपति चुनाव में वोट करेंगे। भारतीय जनता पार्टी के रणनीतिकारों ने इसी दिन के लिए अब तक गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर परिकर, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उप मुख्यमंत्री केशवप्रसाद मौर्या का संसद से इस्तीफा नहीं कराया था। मनोहर परिकर राज्यसभा के सदस्य हैं। जब कि स्वामी आदित्यनाथ और केशवप्रसाद मौर्या लोकसभा के लिए चुने गए थे। राज्यों का दायित्व संभालने के बाद उन्हें राज्य की सभाओं से चुनकर आना होगा। छह महीने के भीतर संसद से इस्तीफा दिए जाने का प्रावधान है। इसी नियम का फायदा भारतीय जनता पार्टी के रणनीतिकारों को मिला। राष्ट्रपति चुनाव में तीनों सांसदों वोट देकर संसदीय सदस्यता से इस्तीफा दे देंगे। उसके बाद उन्हें विधानसभा या विधान परिषद का सदस्य चुनकर आना होगा। आदित्यनाथ और मौर्या लखनऊ में राष्ट्रपति पद के लिए वोट करेंगे जब कि परिकर गोवा में। भारतीय जनता पार्टी के अध्क्ष अमित शाह गुजरात से विधायक हैं, लेकिन वह अपने मताधिकार का प्रयोग दिल्ली में ही करेंगे। ऐसे ही कई सांसद और विधायक वोटिंग वाले दिन दिल्ली में रहेंगे उन्होंने भी दिल्ली में वोट करने की इजाजत चुनाव आयोग से ली है।

अंबेडकर के बहाने

तीन दिनों के अंतरराष्ट्रीय अंबेडकर कान्फ्रेंस के बहाने 21 जुलाई को बेंगलूरु में देश-विदेश के 200 चुनिंदा स्पीकर जमा होंगे। मार्टिन लूथर किंग-3 से लेकर प्रकाश अंबेडकर तक। इतिहासकार रामचंद्र गुहा से लेकर कांग्रेस अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के अध्यक्ष केसी राजू तक। कुल 149 राष्ट्रीय स्तर के और 80 राज्य स्तर के वक्ता तीन दिन की मैराथन बैठक में दलित, आदिवासी व अल्पसंख्यकों के मानवाधिकार, स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक अधिकारों पर विस्तार से मंथन करेंगे। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने इस कार्यक्रम को व्यक्तिगत रुचि लेकर तैयार करवाया है। कांग्रेस अध्यक्ष

राग दरबार

सोनिया गांधी और उपाध्यक्ष राहुल गांधी को न्योता भेजा गया है। सोनिया गांधी शायद ही जाएं, पर राहुल गांधी के जाने की संभावना है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति के बीच मंच का उपयोग जाहिर तौर पर केंद्र की सत्ता के खिलाफ किया जाएगा। कर्नाटक में विधानसभा चुनाव होने हैं। वहां कांग्रेस से सत्ता छीनने के लिए भारतीय जनता पार्टी येदियुरप्पा के नेतृत्व में पूरा जोर लगा रही है। लिंगायत और वोकालिंगा के बीच बंटी सियासत के बीच सम्मलेन से दबे कुचले वोटों के ध्रुवीकरण का प्रयास होगा।

पुनिया का पुण्य

ऐसे कम ही अवसर आते हैं जब नौकरशाही से निकलकर कोई अधिकारी धमक वाला नेता बन जाए। कुछ को मौका मिला भी तो समय के साथ उनकी धार कुंद होती गई। उनकी उपयोगिता खत्म होती गई। उप्र के मुख्य सचिव रहे पीएल पुनिया चंद नौकरशाह से नेता बने भीड़ के बीच अपवाद हैं। वे कभी मायावती के करीबी थे। राहुल गांधी ने उन्हें पिक एंड चूज किया। उन्हें कांग्रेस में लाए। अनुसूचित जाति आयोग का अध्यक्ष बनाया। राज्यसभा की सांसदी से नवाजा। गांधी परिवार रहे बेहद करीब रहे कैप्टन सतीश शर्मा के द्वारा खाली की गई 34 रकाबगंज रोड स्थित केंद्रीय मंत्रियों वाली टाइप आठ की शानदार कोठी उन्हें आवंटित की गई और अब छत्तीसगढ़ जैसे महत्वपूर्ण राज्य का प्रभारी बना दिया गया। पुनिया अपने लो-प्रोफाइल कामकाज के लिए जाने जाते हैं, मगर काम अब तक उन्हें कांग्रेस की सियासत में हाईप्रोफाइल ही मिला। एआईसीसी में उन्हें पांच नंबर कमरा अलॉट किया गया है। छग के वरिष्ठतम नेता मोतीलाल वोरा के बगल वाला कमरा ताकि राज्य की बिसात पर मोहरे बिछाने में वोरा के सान्निध्य का लाभ भी मिल सके।

और अंत में...

गोरखपुर की महिला आईपीएस चारू निगम को एक स्थानीय भारतीय जनता पार्टी नेता के फटकार के बाद रोते हुए वीडियो वायरल हुआ। फिर बुलंदशहर में पदस्थापित महिला आईपीएस श्रेष्ठा शर्मा का चालान के नाम पर हंगामा करते हुए भारतीय जनता पार्टी नेताओं को सरे बाजार धमकाते हुए वीडियो वायरल हुआ। उन्हें लेडी सिंघम कहा जाने लगा। अब ताजा मामला तीसरी महिला आईपीएस डी. रूपा कुमार का सामने आया है। रूपा कुमार बंगलूरू में डीआईजी जेल के पद पर तैनात हैं। उन्होंने अपने रिपोर्टिंग अधिकारी, डीजी जेल एचएन सत्यनारायणा पर घूस लेने का आरोप लगाते हुए उन्हीं को रिपोर्ट सौंपी है। कर्नाटक की सियासत में हड़कंप मच गया है। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने जांच बिठा दी है। रूपा कुमार ने डीजी जेल पर आरोप लगाया है कि उनके सहित कुछ अन्य जेल अधिकारियों ने जेल में बंद शशिकला से दो करोड़ रुपये रिश्वत लेकर मनपसंद खाना बनाने का इंतजाम किया। मिलने-जुलने वालों को कभी भी आने-जाने की छूट दी। रूपा ने मीडिया में बयान दिया तो मुख्यमंत्री भी उखड़े हुए हैं।

-हरिभूमि ब्यूरो